

UPPCS सामान्य अध्ययन
भारतीय इतिहास
खण्ड 2: मध्यकालीन भारत

सम्पूर्ण समयरेखा पुस्तक



लेखक: शैलेन्द्र यादव 2026

विषय-सूची

भाग-2 : मध्यकालीन भारत

3

अध्याय 8

प्रारंभिक मध्यकाल (लगभग 750-1200 ईस्वी)

4

अध्याय 9

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ईस्वी)

19

अध्याय 10

भक्ति-सूफी आंदोलन, विजयनगर-बहमनी एवं प्रांतीय राज्य

33

अध्याय 11

मुगल साम्राज्य एवं सूर वंश (1526-1707 ईस्वी)

47

अध्याय 12

मराठा, उत्तर-मुगल काल एवं क्षेत्रीय राज्य (लगभग 1627-1799 ईस्वी)

62

भाग-2

मध्यकालीन भारत

प्रारंभिक मध्यकाल से मराठा एवं क्षेत्रीय राज्य तक

अध्याय 8 — प्रारंभिक मध्यकाल (लगभग 750-1200 ईस्वी)

अध्याय 9 — दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ईस्वी)

अध्याय 10 — भक्ति-सूफी आंदोलन, विजयनगर-बहमनी एवं प्रांतीय राज्य

अध्याय 11 — मुगल साम्राज्य एवं सूर वंश (1526-1707 ईस्वी)

अध्याय 12 — मराठा, उत्तर-मुगल काल एवं क्षेत्रीय राज्य (लगभग 1627-1799 ईस्वी)

इतिहास अध्याय 8 — समयरेखा एवं महत्वपूर्ण बिंदु: प्रारंभिक मध्यकाल (लगभग 750-1200 ईस्वी)

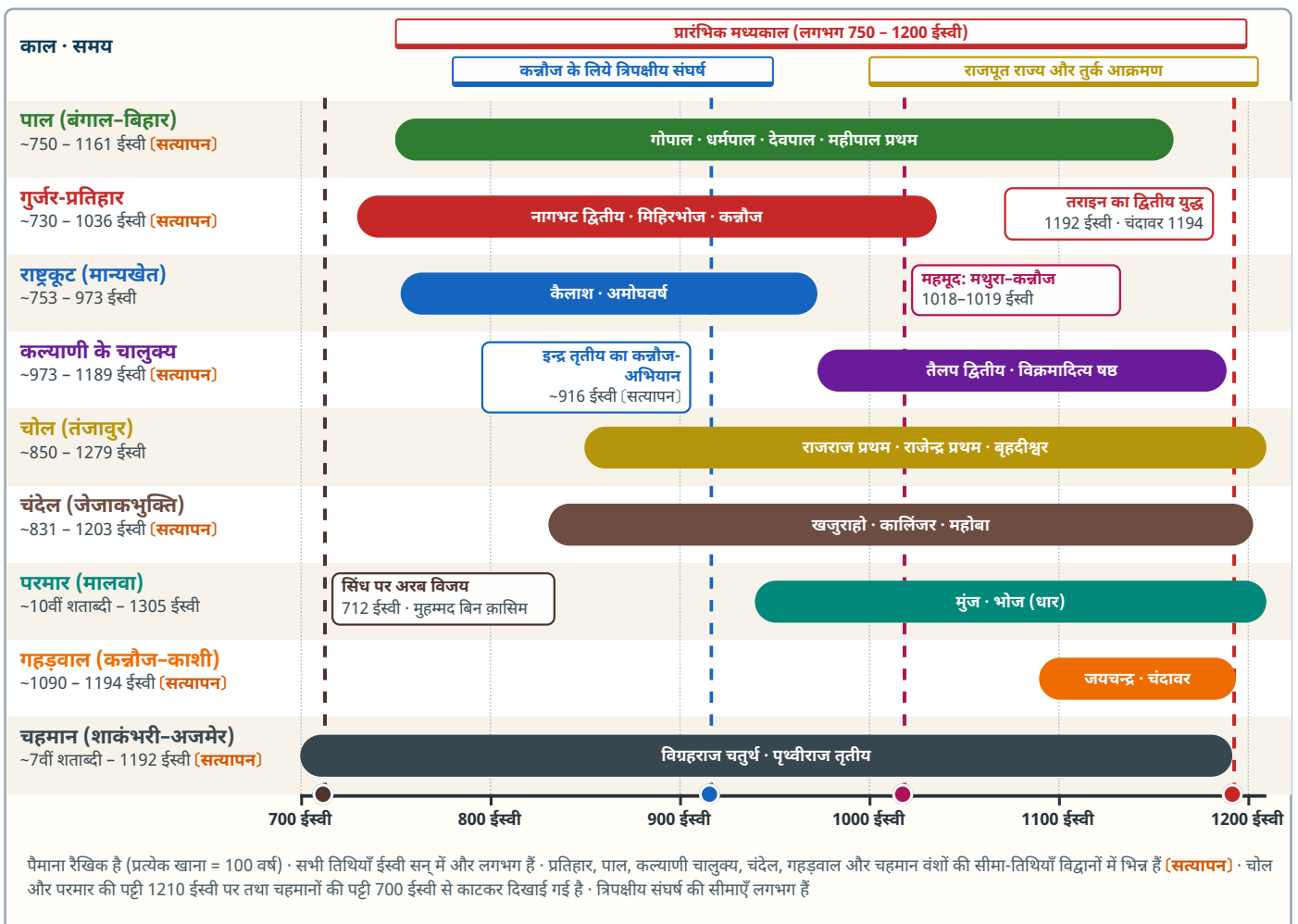
UPPCS प्रारंभिक परीक्षा • सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1 • प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्यकालीन भारत • अध्याय 8 • शैलेंद्र यादव

पुनरावृत्ति समय: लगभग 15 मिनट • लाल चिह्न [UPPCS वर्ष] = स्थानीय प्रश्नपत्र-फ़ाइलों से सत्यापित पूर्व प्रश्न • UPPCS-pattern = परीक्षा-शैली का बिंदु, वर्ष नहीं • (सत्यापन) = विवादित या स्रोत-जाँच योग्य तथ्य

15 मिनट में इस अध्याय को कैसे दोहराएँ

- पहले 3 मिनट में समयरेखा और काल सारणी देखें; 712 (सिंध) → 1018 (मथुरा-कन्नौज) → 1025 (सोमनाथ) → 1191-1192 (तराइन) → 1194 (चंदावर) — यह क्रम पूरे अध्याय की धुरी है।
- अगले 7 मिनट में त्रिपक्षीय संघर्ष, चोल, राजपूत राज्य, साहित्य और तुर्क आक्रमण की सारणियाँ पढ़ें, क्योंकि वर्ष 2020, 2024 और 2025 में इस अध्याय से कई प्रश्न आए हैं।
- अंतिम 5 मिनट में ट्रेप बॉक्स, उत्तर प्रदेश विशेष बॉक्स, स्मृति सूत्र और 10 बहुविकल्पीय प्रश्न हल करें।

1. मास्टर समयरेखा — प्रारंभिक मध्यकाल (लगभग 750-1200 ईस्वी)



याद रखें

- हर्ष के बाद **कन्नौज** उत्तर भारत की प्रतिष्ठा का केंद्र बना; लगभग **780 से 950 ईस्वी** तक इस पर अधिकार के लिये **पाल (बंगाल), गुर्जर-प्रतिहार (पश्चिमी भारत)** और **राष्ट्रकूट (दक्कन)** के बीच **त्रिपक्षीय संघर्ष** चला; अंततः **प्रतिहारों** ने कन्नौज पर अधिकार रखा।
- दसवीं शताब्दी के बाद उत्तर भारत में **राजपूत राज्य** — **गहड़वाल, चहमान (चौहान), चंदेल, परमार, सोलंकी (चालुक्य)** और **कलचुरि** — उभरे; दक्षिण में **चोल** और **कल्याणी के चालुक्य** प्रमुख शक्तियाँ बने।
- **712 ईस्वी** में **मुहम्मद बिन कासिम** ने सिंध जीता; **महमूद गज़नवी** ने **1000-1027 ईस्वी** के बीच लगभग **17 आक्रमण** किए; **मुहम्मद ग़ौरी** ने **तराइन (1192)** और **चंदावर (1194)** जीतकर दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- उत्तर भारत में **राजनीतिक एकता का अभाव** तुर्क आक्रमणों की सफलता का प्रमुख कारण था। **UPPCS 2024**

2. काल सारणी — प्रमुख राजवंश, शासक और घटनाएँ

राजवंश	प्रमुख शासक (लगभग काल)	राजधानी	प्रमुख घटनाएँ और परीक्षा-तथ्य
गुर्जर-प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम (730-760), नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज (836-885), महेन्द्रपाल प्रथम	उज्जयिनी / जालौर, फिर कन्नौज (सत्यापन)	अरबों को रोका; मिहिरभोज की उपाधि "आदिवराह"; ग्वालियर प्रशस्ति
पाल	गोपाल (लगभग 750), धर्मपाल (770-810), देवपाल (810-850), महीपाल प्रथम	बंगाल-बिहार (मुंगेर आदि) (सत्यापन)	बौद्ध; विक्रमशिला और सोमपुर महाविहार; खालिमपुर ताम्रपत्र
राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग (753), कृष्ण प्रथम, ध्रुव, गोविन्द तृतीय, अमोघवर्ष प्रथम (814-878), इन्द्र तृतीय, कृष्ण तृतीय	मान्यखेत (मालखेड़, कर्नाटक)	एलोरा का कैलाश मंदिर (कृष्ण प्रथम); कविराजमार्ग; तक्कोलम (949) UPPCS 2025
कल्याणी के चालुक्य	तैलप द्वितीय (973-997), सोमेश्वर प्रथम, विक्रमादित्य षष्ठ (1076-1126)	मान्यखेत, फिर कल्याणी	विक्रमांकदेवचरित (बिल्हण); मिताक्षरा (विज्ञानेश्वर)
चोल	विजयालय (लगभग 850), परान्तक प्रथम, राजराज प्रथम (985-1014), राजेन्द्र प्रथम (1014-1044)	तंजावुर, फिर गंगैकॉण्डचोलपुरम	उत्तरमेरूर अभिलेख; बृहदीश्वर मंदिर; नौसैनिक अभियान UPPCS 2020 UPPCS 2025
गहड़वाल	चन्द्रदेव, गोविन्दचन्द्र (1114-1155), जयचन्द्र (1170-1194)	कन्नौज और वाराणसी	चंदावर (1194) में जयचन्द्र की पराजय और मृत्यु
चहमान (चौहान)	अजयराज, विग्रहराज चतुर्थ (वीसलदेव), पृथ्वीराज तृतीय (1177-1192 (सत्यापन))	शाकंभरी, फिर अजमेर	तराइन — 1191 में विजय, 1192 में पराजय
चंदेल	नचुक, यशोवर्मन, धंग, विद्याधर, परमर्दिदेव	खजुराहो; दुर्ग कालिंजर और महोबा	खजुराहो मंदिर; महमूद का प्रतिरोध
परमार	सीयक द्वितीय, मुंज (वाक्पति द्वितीय), भोज (लगभग 1010-1055)	धार (धारा नगरी)	समरांगण सूत्रधार; भोजशाला
सोलंकी (गुजरात के चालुक्य)	मूलराज प्रथम, भीम प्रथम, जयसिंह सिद्धराज, कुमारपाल	अन्हिलवाड़ (पाटन)	सोमनाथ (1025); मोढेरा सूर्य मंदिर; दिलवाड़ा (विमल वसही)
कलचुरि (चेदि)	कोक्कल प्रथम, गांगेयदेव, लक्ष्मीकर्ण	त्रिपुरी (जबलपुर के निकट)	गांगेयदेव के लक्ष्मी अंकित स्वर्ण सिक्के
सेन (बंगाल)	हेमंत सेन → विजय सेन → बल्लाल सेन → लक्ष्मण सेन	नदिया / लखनौती (सत्यापन)	जयदेव (गीत गोविन्द); बख्तियार खिलजी का आक्रमण UPPCS 2024

परीक्षा पंक्ति: वर्ष 2024 में बंगाल के सेन शासकों का आरोही कालक्रम पूछा गया — सही क्रम **हेमंत सेन → विजय सेन → बल्लाल सेन → लक्ष्मण सेन** है। **UPPCS 2024**

3. कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष (लगभग 780-950 ईस्वी)

3.1 संघर्ष के कारण

- कन्नौज हर्ष के समय से उत्तर भारत की साम्राज्यिक प्रतिष्ठा का प्रतीक था; इस पर अधिकार का अर्थ मध्य गंगा घाटी के उपजाऊ प्रदेश, व्यापार मार्गों और संसाधनों पर नियंत्रण था।
- यशोवर्मन के बाद कन्नौज के कमज़ोर आयुध शासकों (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के कारण वहाँ शक्ति-शून्यता थी।

3.2 संघर्ष के चरण

चरण	घटना	परिणाम
प्रथम	प्रतिहार वत्सराज ने पाल धर्मपाल को हराया; फिर राष्ट्रकूट ध्रुव ने दोनों को हराया और दक्कन लौट गया	राष्ट्रकूटों का उत्तर में पहला हस्तक्षेप
द्वितीय	धर्मपाल ने इन्द्रायुध को हटाकर चक्रायुध को कन्नौज की गद्दी पर बैठाया और कन्नौज में दरबार किया	खालिमपुर ताम्रपत्र — भोज, मत्स्य, मद्र, कुरु, यदु, यवन, अवन्ति, गांधार और कीर के राजाओं की उपस्थिति
तृतीय	प्रतिहार नागभट द्वितीय ने चक्रायुध और धर्मपाल (मुंगेर के निकट) को हराकर कन्नौज पर अधिकार किया	कन्नौज प्रतिहार राजधानी बना (लगभग 816 ईस्वी (सत्यापन))
चतुर्थ	राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय ने नागभट द्वितीय को हराया, पर फिर दक्कन लौट गया	प्रतिहार शक्ति अस्थायी रूप से दबी
पंचम	मिहिरभोज और महेन्द्रपाल प्रथम के समय प्रतिहार शक्ति का चरम	कन्नौज पर प्रतिहारों का स्थायी अधिकार
षष्ठ	राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय ने कन्नौज को लूटा (लगभग 916 ईस्वी (सत्यापन))	प्रतिहारों का पतन आरंभ; अंततः तीनों शक्तियाँ कमज़ोर हुईं

- संघर्ष का दीर्घकालिक परिणाम — तीनों शक्तियाँ थक गईं, सामंत स्वतंत्र हुए और उत्तर भारत छोटे राजपूत राज्यों में बँट गया; यही बिखराव आगे तुर्क आक्रमणों की सफलता का आधार बना। **UPPCS 2024**

3.3 गुर्जर-प्रतिहार

- नागभट प्रथम ने अरबों (सिंध के गवर्नर जुनैद के आक्रमण) को पश्चिमी भारत में रोका; इसका वर्णन मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति में है।
- मिहिरभोज (836-885 ईस्वी) — वैष्णव; उपाधि "आदिवराह" (सिक्कों पर वराह अंकन); अरब यात्री सुलेमान (851 ईस्वी) ने उसकी अश्वसेना की प्रशंसा की और उसे अरबों का शत्रु बताया।
- महेन्द्रपाल प्रथम — उसके गुरु राजशेखर ने कर्पूरमंजरी (प्राकृत), काव्यमीमांसा और बालरामायण लिखे।
- अरब यात्री अल-मसूदी (915-916 ईस्वी) ने प्रतिहार राजा को "बौरा" कहा (सत्यापन)।
- 1018 ईस्वी में महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय प्रतिहार राज्यपाल कन्नौज छोड़कर भाग गया; इस कायरता के लिये चंदेल विद्याधर ने उसका वध कराया।

3.4 पाल वंश (बंगाल-बिहार)

- गोपाल को लगभग 750 ईस्वी में अराजकता (मत्स्य न्याय) समाप्त करने के लिये प्रमुख लोगों ने राजा चुना (खालिमपुर ताम्रपत्र)।
- धर्मपाल (लगभग 770-810 ईस्वी) — विक्रमशिला महाविहार (भागलपुर, बिहार) और सोमपुर महाविहार (पहाड़पुर, बांग्लादेश) की स्थापना; उपाधि "परमसौगत"; गुजराती कवि सोड्डल ने उसे "उत्तरापथस्वामी" कहा।
- देवपाल — शैलेन्द्र राजा बालपुत्रदेव (सुवर्णद्वीप / जावा-सुमात्रा) के अनुरोध पर नालंदा के विहार के लिये पाँच गाँव दान किए (नालंदा ताम्रपत्र)।
- महीपाल प्रथम (लगभग 988-1038 ईस्वी) — पाल शक्ति का पुनरुत्थान; पर राजेन्द्र चोल के गंगा अभियान में पराजित।
- रामपाल — कैवर्त विद्रोह (दिव्य के नेतृत्व में) को दबाया; संध्याकर नंदी का रामचरित इसका स्रोत है।
- पाल काल में वज्रयान बौद्ध धर्म का प्रसार; अतीश दीपंकर (विक्रमशिला) तिब्बत गए; कलाकार धीमान और वीतपाल (तारानाथ के अनुसार) से पाल कला शैली जुड़ी है।

- विक्रमशिला को लगभग 1203 ईस्वी में बख्तियार खिलजी ने नष्ट किया (सत्यापन)।

3.5 राष्ट्रकूट

- दन्तिदुर्ग ने लगभग 753 ईस्वी में बादामी के चालुक्य कीर्तिवर्मन द्वितीय को हराकर वंश की स्थापना की।
- कृष्ण प्रथम (756-774 ईस्वी) — एलोरा का कैलाश मंदिर (गुफा 16) — एक ही चट्टान को ऊपर से नीचे काटकर बना एकात्म मंदिर।
- ध्रुव और गोविन्द तृतीय ने उत्तर भारत में अभियान किए; ध्रुव ने गंगा-यमुना के चिह्न को राजकीय प्रतीक बनाया (सत्यापन)।
- अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ईस्वी) — राजधानी मान्यखेत; जैन आचार्य जिनसेन उसके गुरु; कविराजमार्ग (कन्नड़ का प्रथम उपलब्ध काव्यशास्त्र, रचना का श्रेय कवि श्रीविजय को भी (सत्यापन)) और प्रश्नोत्तर रत्नमालिका; गणितज्ञ महावीराचार्य (गणितसारसंग्रह) उसके दरबार में। UPPCS 2025
- अरब यात्री सुलेमान ने अमोघवर्ष को विश्व के चार महान राजाओं में गिना; अरब लेखकों ने राष्ट्रकूट राजा को "बलहरा" (वल्लभराज) कहा।
- इन्द्र तृतीय — कन्नौज पर आक्रमण; उसके दरबारी कवि त्रिविक्रम भट्ट ने नल चम्पू लिखा। UPPCS 2025
- कृष्ण तृतीय — तक्कोलम का युद्ध (949 ईस्वी) में चोल परान्तक प्रथम को हराया; कन्नड़ कवि पोन्न उसके दरबार में।
- 973 ईस्वी में तैलप द्वितीय ने अंतिम राष्ट्रकूट कर्क द्वितीय को हराया।
- एलोरा — 34 गुफाएँ: बौद्ध (1-12), हिंदू (13-29), जैन (30-34); 1983 में यूनेस्को विश्व धरोहर।

4. राजपूत राज्य (लगभग 900-1200 ईस्वी)

4.1 राजपूतों की उत्पत्ति (एक दृष्टि में)

- अग्निकुल सिद्धांत — पृथ्वीराज रासो के अनुसार प्रतिहार, परमार, चालुक्य (सोलंकी) और चहमान आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पन्न हुए; इतिहासकार इसे मिथक मानते हैं।
- अन्य मत — विदेशी (हूण-गुर्जर) मूल, प्राचीन क्षत्रिय मूल या स्थानीय वर्गों का क्षत्रियकरण; आधुनिक इतिहासकार इसे सामाजिक प्रक्रिया मानते हैं।

4.2 प्रमुख राजपूत राज्य

वंश	प्रमुख शासक और तथ्य	साहित्य / स्थापत्य
गहड़वाल (कन्नौज-वाराणसी)	चन्द्रदेव (संस्थापक, लगभग 1090 (सत्यापन)); गोविन्दचन्द्र सबसे प्रतापी; जयचन्द्र 1194 में चंदावर में गौरी से पराजित और मारा गया	मंत्री लक्ष्मीधर का कृत्यकल्पतरु; श्रीहर्ष का नैषधीयचरित (जयचन्द्र का दरबार); "तुरुष्कदंड" कर
चहमान (शाकंभरी-अजमेर)	अजयराज ने अजमेर (अजयमेरु) बसाया; अणोरंज ने आनासागर झील बनवाई; विग्रहराज चतुर्थ ने तोमरों से दिल्ली जीती; पृथ्वीराज तृतीय ने 1182 में चंदेल परमर्दिदेव को हराया	विग्रहराज का हरिकेलि नाटक; अजमेर का संस्कृत विद्यालय (बाद में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा); चंद बरदाई — पृथ्वीराज रासो; जयानक — पृथ्वीराजविजय UPPCS 2020
चंदेल (जेजाकभुक्ति / बुंदेलखंड)	नचुक (लगभग 831 (सत्यापन)) संस्थापक; यशोवर्मन ने कालिंजर जीता; धंग; विद्याधर ने महमूद का प्रतिरोध किया; परमर्दिदेव (1182 में पृथ्वीराज से, 1202-1203 में कुतुबुद्दीन ऐबक से पराजित)	खजुराहो के मंदिर; कृष्ण मिश्र का प्रबोधचन्द्रोदय (कीर्तिवर्मन के समय); आल्हा-ऊदल की गाथा (जगनिक, आल्हखंड)
परमार (मालवा)	सीयक द्वितीय स्वतंत्र हुआ; मुंज को तैलप द्वितीय ने मारा; भोज (लगभग 1010-1055) विद्वान राजा, उपाधि "कविराज"; चालुक्य भीम प्रथम और कलचुरि लक्ष्मीकर्ण के संयुक्त आक्रमण के बीच मृत्यु	भोज के समरांगण सूत्रधार (स्थापत्य), सरस्वतीकंठाभरण, राजमार्तंड, युक्तिकल्पतरु; धार की भोजशाला; भोजपुर शिव मंदिर (अधूरा) और भोजपुर झील; पद्मगुप्त का नवसाहसांकचरित
सोलंकी (गुजरात)	मूलराज प्रथम (लगभग 940) संस्थापक; भीम प्रथम के समय सोमनाथ (1025) पर महमूद का आक्रमण; मूलराज द्वितीय (संरक्षिका नायकी देवी) ने 1178 में गौरी को कायद्रा (आबू के निकट) में हराया	मोढेरा सूर्य मंदिर (1026-1027); दिलवाड़ा का विमल वसही (1031, मंत्री विमल); रानी की वाव (रानी उदयमती, यूनेस्को 2014); कुमारपाल के गुरु जैन आचार्य हेमचन्द्र

वंश	प्रमुख शासक और तथ्य	साहित्य / स्थापत्य
कलचुरि (चेदि, त्रिपुरी)	कोवकल प्रथम संस्थापक; गांगेयदेव ने "विक्रमादित्य" उपाधि ली और बैठी हुई लक्ष्मी वाले स्वर्ण सिक्के चलाए; लक्ष्मीकर्ण ने भोज के विरुद्ध गठबंधन किया	वाराणसी का कर्णमेरु मंदिर (सत्यापन)
तोमर (दिल्ली)	अनंगपाल को ढिल्लिका (दिल्ली) बसाने और लालकोट का श्रेय (सत्यापन)	—

4.3 राजपूत काल की विशेषताएँ

- **सामंतवाद** — भूमिदान, वंशानुगत सामंत और सैनिक सेवा; कुल और वंश पर आधारित राजनीति।
- **दुर्ग** (कालिंजर, ग्वालियर, चित्तौड़, रणथम्भौर) का सैनिक महत्त्व; हाथियों पर निर्भरता और घुड़सवार तीरंदाजों का अभाव तुर्कों के विरुद्ध कमज़ोरी बना।

5. दक्षिण भारत — कल्याणी के चालुक्य और चोल

5.1 कल्याणी के चालुक्य (लगभग 973–1189 ईस्वी)

- **तैलप द्वितीय** ने 973 ईस्वी में राष्ट्रकूटों को हटाकर वंश की स्थापना की और परमार मुंज को हराकर मार डाला।
- **सोमेश्वर प्रथम** ने राजधानी कल्याणी (वर्तमान बसवकल्याण, बीदर, कर्नाटक) बनाई; चोलों से लगातार संघर्ष (वेंगी और रायचूर दोआब)।
- **विक्रमादित्य षष्ठ (1076–1126 ईस्वी)** — चालुक्य-विक्रम संवत् (1076) आरंभ किया; बिल्हण का विक्रमांकदेवचरित और विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका) उसके दरबार से जुड़े हैं।
- **सोमेश्वर तृतीय** ने ज्ञानकोश मानसोल्लास (अभिलषितार्थ चिंतामणि) लिखा।
- **कलचुरि बिज्जल** ने कुछ समय कल्याणी पर अधिकार किया; उसके मंत्री बसव ने लिंगायत (वीरशैव) आंदोलन चलाया।
- लगभग 1189 ईस्वी के बाद राज्य होयसल (द्वारसमुद्र), यादव (देवगिरि) और काकतीय (वारंगल) में बँट गया।

5.2 चोल साम्राज्य — राजनीतिक इतिहास

- **विजयालय** ने लगभग 850 ईस्वी में मुत्तरेयरो से तंजावुर जीतकर वंश की स्थापना की।
- **परान्तक प्रथम (907–955 ईस्वी)** — मदुरै विजय; उत्तरमेरूर अभिलेख (919 और 921 ईस्वी); तक्कोलम (949) में राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय से पराजय।
- **राजराज प्रथम (985–1014 ईस्वी)** — श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय (अनुराधापुर नष्ट, पोलोन्नरुवा नई राजधानी), मालदीव पर अधिकार; भूमि सर्वेक्षण; बृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर, तंजावुर (लगभग 1010); नागपट्टिनम में शैलेन्द्र राजा द्वारा बौद्ध विहार की अनुमति; उपाधि "मुम्मूडि चोल"। **UPPCS 2025**
- **राजेन्द्र प्रथम (1014–1044 ईस्वी)** — गंगा अभियान (पाल महीपाल प्रथम को हराया) और उपाधि "गंगैकॉडचोल"; नई राजधानी गंगैकॉडचोलपुरम; श्रीविजय (कडारम / केदाह) पर नौसैनिक अभियान (लगभग 1025) और उपाधि "कडारमकॉड"; सम्पूर्ण श्रीलंका पर अधिकार।
- **कुलोत्तुंग प्रथम (1070–1120 ईस्वी)** — चीन में 72 व्यापारियों का दूतमंडल (1077 (सत्यापन)); चुंगी कर हटाने के कारण "शुंगम तवित्त" उपाधि।
- चोलों ने मंदिरों की दीवारों पर विजयों के ऐतिहासिक विवरण (मेयकीर्ति / प्रशस्ति) उत्कीर्ण कराए; इसी से हमें चोलों के विषय में पूर्ववर्ती राजवंशों की अपेक्षा अधिक जानकारी है। **UPPCS 2020**

5.3 चोल प्रशासन और स्थानीय स्वशासन

स्तर / संस्था	विवरण
मंडलम् (प्रांत) → वलनाडु → नाडु → ग्राम	प्रशासनिक इकाइयाँ; नाडु की सभा "नाट्टार"

स्तर / संस्था	विवरण
उर	सामान्य ग्रामों की सभा — सभी भूस्वामी करदाता
सभा (महासभा)	ब्रह्मदेय (ब्राह्मणों को दिए गए) ग्रामों की सभा
नगरम्	व्यापारियों की सभा
वारियम् (समितियाँ)	जैसे एरि-वारियम् (तालाब), तोट्ट-वारियम् (उद्यान), संवत्सर-वारियम् (वार्षिक)
भूमि के प्रकार	वेल्लनवर्गई (गैर-ब्राह्मण कृषक), ब्रह्मदेय, शालाभोग (विद्यालय हेतु), देवदान (मंदिर हेतु), पल्लिच्चंदम् (जैन संस्थाओं हेतु)

- उत्तरमेरूर (कांचीपुरम ज़िला, तमिलनाडु) के परान्तक प्रथम के अभिलेखों में सभा के सदस्यों के चुनाव की विधि दी गई है — नाम ताड़पत्रों पर लिखकर घड़े में डाले जाते थे और एक बालक पर्ची निकालता था (कुडवोलै पद्धति)।
- सदस्य बनने की योग्यता — भूमि का स्वामित्व, अपना घर, आयु लगभग 35 से 70 वर्ष, वेदों का ज्ञान, प्रशासन में कुशलता और ईमानदारी; हिसाब न देने वाले और उनके संबंधी अयोग्य थे।

5.4 चोल कला

- बृहदीश्वर मंदिर (तंजावुर) — द्रविड़ शैली, ऊँचा विमान (लगभग 66 मीटर (सत्यापन)) और विशाल नंदी; गंगैकोण्डचोलपुरम और दारासुरम (ऐरावतेश्वर) मंदिरों के साथ "महान जीवंत चोल मंदिर" के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर (1987; विस्तार 2004)।
- कांस्य प्रतिमाएँ — लुप्त-मोम (सिरे-पेट्टे) विधि; नटराज की प्रतिमा सबसे प्रसिद्ध।

6. अरब आक्रमण और महमूद गज़नवी

6.1 सिंध पर अरब आक्रमण (712 ईस्वी)

- उमय्यद खलीफ़ा के समय इराक़ के गवर्नर हज्जाज ने मुहम्मद बिन कासिम को भेजा; उसने 712 ईस्वी में सिंध के राजा दाहिर को रावर के युद्ध में हराया और देबल, ब्राह्मणाबाद, अलोर् और मुल्तान जीते।
- इस आक्रमण का प्रमुख स्रोत चचनामा (अरबी ग्रंथ का तेरहवीं शताब्दी का फ़ारसी अनुवाद) है।
- अरब शासन सिंध और मुल्तान तक सीमित रहा; आगे बढ़ने के प्रयासों को नागभट्ट प्रथम और लाट के चालुक्यों ने रोका (सत्यापन)।
- परिणाम — भारतीय अंक पद्धति, खगोल और चिकित्सा का अरब जगत में प्रसार (ब्रह्मस्फुट सिद्धांत आदि का अरबी अनुवाद)।

6.2 महमूद गज़नवी (शासन 998–1030 ईस्वी)

- गज़नी (अफ़ग़ानिस्तान) का यामिनी शासक; खलीफ़ा से "यमीन-उद-दौला" उपाधि; उसके आक्रमणों का उद्देश्य मुख्यतः धन की लूट था, स्थायी साम्राज्य नहीं।
- लगभग 1000–1027 ईस्वी के बीच 17 आक्रमण (सत्यापन: संख्या)।

वर्ष (लगभग)	आक्रमण	तथ्य
1001	हिंदूशाही जयपाल	पेशावर के निकट पराजय; जयपाल ने आत्मदाह किया
1008–1009	आनंदपाल	वैहिंद के निकट पराजय; फिर नगरकोट (काँगड़ा) की लूट
1014	थानेश्वर	चक्रस्वामी मंदिर की लूट (सत्यापन)
1018–1019	बरन (बुलंदशहर), महावन, मथुरा, कन्नौज	प्रतिहार राज्यपाल भागा; मथुरा के मंदिर लूटे गए
1019 और 1022	चंदेल विद्याधर, कालिंजर	बिना निर्णायक युद्ध के संधि
1025	सोमनाथ (गुजरात)	सोलंकी भीम प्रथम भागा; मंदिर लूटा गया
1027	जाटों के विरुद्ध	अंतिम आक्रमण

- महमूद के दरबार में अल-बरूनी, फ़ारसी कवि फ़िरदौसी (शाहनामा) और इतिहासकार उतबी (तारीख़-ए-यामिनी) थे।

6.3 अल-बरूनी

- ख्वारिज़्म (मध्य एशिया) का विद्वान; **महमूद** के साथ भारत आया; **संस्कृत** सीखी।
- **किताब-उल-हिंद (तहकीक-ए-हिंद, लगभग 1030 ईस्वी, अरबी भाषा)** — भारतीय धर्म, दर्शन, खगोल, गणित, त्योहार, जाति और संवत्‌ों का विवरण **UPPCS 2020**; उसने **गुप्त संवत्** को **वलभी संवत्** के समान बताया।
- उसने **चार वर्णों** के बाहर **अंत्यजों** का वर्णन किया और भारतीयों की **बाहरी ज्ञान के प्रति उदासीनता** की आलोचना की।
- **एडवर्ड सर्खाउ** ने इसका अंग्रेज़ी अनुवाद किया।
- विदेशी यात्रियों का क्रम — **फाह्यान → ह्वेनत्सांग → इत्सिंग → अल-बरूनी**। **UPPCS 2024**

7. मुहम्मद ग़ौरी और राजपूत राज्यों का पतन

वर्ष	घटना	तथ्य
1175	मुल्तान विजय	गोमल दर्रे से भारत में प्रवेश (सत्यापन)
1178	कायद्रा (आबू के निकट) में पराजय	सोलंकी मूलराज द्वितीय (संरक्षिका नायकी देवी) से हारा
1186	लाहौर विजय	अंतिम गज़नवी खुसरो मलिक को हटाया
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज तृतीय विजयी; दिल्ली के गोविन्दराज ने ग़ौरी को घायल किया
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	ग़ौरी विजयी ; पृथ्वीराज पकड़ा गया और मारा गया; तराइन वर्तमान हरियाणा (करनाल-थानेसर क्षेत्र) में है
1194	चंदावर का युद्ध	गहड़वाल जयचन्द्र पराजित और मारा गया; चंदावर यमुना तट पर, वर्तमान फ़िरोज़ाबाद (उत्तर प्रदेश) के निकट
1202-1203	कालिंजर	कुतुबुद्दीन ऐबक ने चंदेल परमर्दिदेव को हराया
लगभग 1204-1205 (सत्यापन)	नदिया (बंगाल)	बख्तियार ख़िलजी ने लक्ष्मण सेन को भगाया; इससे पहले बिहार में बौद्ध विहार नष्ट किए
1206	ग़ौरी की मृत्यु	इलेम के निकट खोखरों द्वारा हत्या (सत्यापन) ; कुतुबुद्दीन ऐबक से दिल्ली सल्तनत का आरंभ

- **तुर्कों की सफलता के कारण** — उत्तर भारत में **राजनीतिक एकता का अभाव** और राजपूत राज्यों के आपसी संघर्ष; तुर्कों के **घुड़सवार तीरंदाज़, श्रेष्ठ सैन्य संगठन** और **इक़ता** जैसी व्यवस्था; राजपूतों की **हाथियों** पर निर्भरता और **सामंती सेना**। **UPPCS 2024**
- इस काल का प्रमुख फ़ारसी स्रोत **मिनहाज-उस-सिराज** का **तबक़ात-ए-नासिरी** (लगभग 1260) है। **UPPCS 2020**

8. साहित्य और स्रोत — कल्हण, बंगाल और कश्मीर

8.1 कल्हण की राजतरंगिणी

- **कल्हण** ने **1148-1149 ईस्वी** में **संस्कृत** में **राजतरंगिणी** लिखी; इसमें **8 तरंग** (अध्याय) हैं और यह **कश्मीर** का इतिहास है।
- इसे भारत का पहला **ऐतिहासिक दृष्टि** वाला ग्रंथ माना जाता है, क्योंकि कल्हण ने **अभिलेखों, सिक्कों** और पूर्व ग्रंथों का आलोचनात्मक उपयोग किया।
- इसमें **कर्कोट** (ललितादित्य मुक्तापीड — **मार्तण्ड सूर्य मंदिर**), **उत्पल** (**अवन्तिवर्मन**, अभियंता **सुय्य**) और **लोहार** (रानी **दिद्दा**) वंशों का वर्णन है; बाद में **जोनराज** ने इसे आगे बढ़ाया।

8.2 प्रमुख रचनाएँ और रचनाकार

रचनाकार	रचना	संदर्भ
त्रिविक्रम भट्ट	नल चम्पू	राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय का दरबार UPPCS 2025